ग्रामीण एवं शहरी महाविद्यालयीन छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन

रचना सिंह ठाकुर[1]

''स्वयं को व संवेगों को निर्देशित करने, उनमें विभेद करने की योग्यता और इन सूचनाओं का अपनी सोच व कार्यों में निर्देशक के रूप में उपयोग करने की योग्यता संवेगात्मक बुद्धि है।'' प्रस्तुत शोधपत्र में ग्रामीण एवं शहरी महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोधकार्य सर्वेक्षण विधि पर आधारित है। इस हेतु शोधकर्त्ता ने ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विभिन्न संकाय से 800 छात्र एवं छात्राओं को न्यादर्श के रूप में लिया। विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के मापन हेतु शोधकर्त्री ने अनुकूल हाइड, संज्योत पेठे, उपिंदर धर द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि मापनी को उपकरण के रूप में प्रयोग किया एवं निष्कर्ष स्वरूप पाया कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विभिन्न संकाय के महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। अर्थात शहरी एवं ग्रामीण परिवेश एवं विभिन्न संकाय को महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

मुख्य बिन्दु – संवेगात्मक बुद्धि, महाविद्यायीन विद्यार्थी

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में सभी क्षेत्रों में सफलता प्राप्ति का इच्छुक होता है। मनोविज्ञान में सफलता प्राप्ति हेतु दो महत्वपूर्ण साधन जो व्यक्ति के पास होने चाहिए वह हैं, संवेगात्मक बुद्धि और मूल्य। संवेग व्यक्ति की प्रतिदिन की जिंदगी को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। संवेग प्रत्येक संस्कृति, देश व मानव प्रजाति में पाये जाते हैं। इसके बावजूद कुछ लोग सफल होते हैं कुछ असफल। सफलता, असफलता का निर्धारण उत्पादकता, गुणवत्ता, इत्यादि के आधार पर किया जाता है चाहे वह शैक्षिक क्षेत्र हो, आर्थिक क्षेत्र हो, कार्मिक क्षेत्र हो या प्रबंध क्षेत्र।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता वृद्धि के साथ साथ जीवन के कठिन क्षणों को प्रबंधित करने एवं प्रोत्साहित करने की हमारी क्षमता अर्थात् संवेगात्मक बुद्धि पर भी निर्भर करती है। संवेग के सकारात्मक विकास का प्रभाव प्रत्येक क्षेत्र में सकारात्मक पड़ता है। व्यक्ति अपनी सकारात्मक ऊर्जा का प्रयोग करते हुये प्रत्येक क्षेत्र में अपना उत्कृष्ट निष्पादन देता है परिणामतः उत्पादकता बढ़ती है और सामाजिक संबंधों के निर्वहन की क्षमता में भी वृद्धि होती है।

व्यक्ति में विकसित संवेग की मात्रा उनको बाल्यकाल में दिये गये प्रशिक्षण और उनके द्वारा ग्रहण किये गये ज्ञान के आधार पर भिन्न–भिन्न होती है, प्राचीनकाल से ही यह अवधारणा रही है कि बालक की प्रथम पाठशाला परिवार है। परिवार में ही बालक संवेग की महत्ता को सीखता है, जिसका प्रभाव उसके सम्पूर्ण जीवन में विद्यमान रहता है। शहरी एवं ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में संयुक्त परिवार प्रथा के धीरे–धीरे समाप्त होने और न्यूक्लियर फैमिली के आगमन के साथ ही बालक के संवेग प्रशिक्षण प्राप्ति और उनके समुचित प्रयोग के अवसरों में कमी आई है।

[1] शोधार्थी, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

संवेगात्मक बुद्धि का सम्प्रत्यय 1990 में विकसित हुआ। यही दशक कम्प्यूटर, इंटरनेट आदि के माध्यम से संचार क्रांति का भी था। संचार क्रांति ने ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों को प्रभावित किया। नगरीय क्षेत्रों में आधारभूत संरचना के विकास, बिजली उपलब्धता, आदि के कारण संचार साधनों ने नगरीय क्षेत्रों को अधिक प्रोत्साहित किया है। साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता की कमी, जागरूकता का अभाव, निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर ने संचार क्रांति के प्रभावों की भिन्नता को जन्म दिया। क्या इन भिन्नताओं ने ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के संवेग को भी भिन्न–भिन्न रूप से प्रभावित किया है? इसका अध्ययन किया जाना आवश्यक है। ताकि विसंगतियों को प्रकाश में लाया जाये और उन्हें दूर करने के प्रयास किये जायें।

संवेगात्मक बुद्धि सम्प्रत्यय का विकास पश्चिमी देशों हुआ। क्या यह पूर्वी देशों जैसे कि भारतीय परिवेश में भी व्यावहारिक रूप से प्रभावकारी हो सकता है? इसके लिए आवश्यक है कि भारतीय क्षेत्रों में भी संवेगात्मक लब्धि संबधी शोधों को बढ़ावा दिया जाये। इसी तरह का प्रयास प्रस्तुत शोध कार्य में किया जा रहा है। बुद्धि लब्धि व व्यक्तित्व के विभिन्न मापनों के संदर्भ में संवेगात्मक बुद्धि के काफी प्रमाण देखने को मिले हैं। बुद्धिलब्धि व व्यक्तित्व के मापन भी पश्चिम में विकसित हुए हैं। भिन्न सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के कारण संस्कृति मुक्त परीक्षण बनाये जाने की आवश्यकता है। इन्हें बनाने के लिए आवश्यक जानकारी इस क्षेत्र में हुये शोधकार्यों के माध्यम से ही जुटाई जा सकती है। आवश्यक सावधानियों को संवेगात्मक बुद्धि के क्षेत्र में अध्ययन द्वारा ही सामने लाया जा सकता है।

उद्देश्य– प्रस्तुत शोध हेतु निम्नांकित उद्देश्य लिये गये है।

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के छात्र/छात्राओं/विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन।
2. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के कला/गणित/जीवविज्ञान/वाणिज्य विषय समूह के छात्र/छात्राओं/विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन।

चर– प्रस्तुत शोध कार्य में निम्नलिखित चर लिये गये है।

स्वतंत्र चर – (i) ग्रामीण महाविद्यालयीन छात्र/छात्राएँ
(ii) शहरी महाविद्यालयीन छात्र/छात्राएँ

परतंत्र चर – संवेगात्मक बुद्धि

नियंत्रण चर – (i) आयु (ii) कक्षा

परिकल्पना : प्रस्तुत शोध कार्य हेतु निम्नांकित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है–

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के छात्र/छात्राओं/विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में अंतर नहीं होता है।
2. ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के कला/गणित /जीव विज्ञान/वाणिज्य विषय समूह के छात्र/छात्राओं/ विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में अंतर नहीं होता है।

न्यादर्श– प्रस्तुत शोध कार्य में ग्रामीण एवं शहरी महाविद्यालय के कला, गणित, जीव विज्ञान, वाणिज्य संकाय के छात्र–छात्राओं का न्यादर्श चयन निम्नानुसार किया गया –

सारणी क्रमांक 01

छात्र–छात्राओं के रहवास संबंधी प्रतिदर्श

महाविद्यालय	छात्र	छात्राएँ	योग
ग्रामीण	200	200	400
शहरी	200	200	400
योग	400	400	800

सारणी क्रमांक 02

छात्र–छात्राओं के विषय संकाय आधारित प्रतिदर्श

महाविद्यालय	विषय	छात्र	छात्राएँ	योग
ग्रामीण	कला	50	50	100
	गणित	50	50	100
	जीव विज्ञान	50	50	100
	वाणिज्य	50	50	100
शहरी	कला	50	50	100
	गणित	50	50	100
	जीव विज्ञान	50	50	100
	वाणिज्य	50	50	100
	कुल	**400**	**400**	**800**

प्रयुक्त उपकरण–

संवेगात्मक बुद्धि मापनीः– अनुकूल हाइड, संज्योत पेठे, उपिंदर धर।

सांख्यिकीय विधियां– प्राप्त प्राप्तांकों के विश्लेषण के लिये निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है– (1) मध्यमान (2) मानक विचलन (3) क्रांतिक अनुपात (4) एफ अनुपात

परिणामों का विश्लेषण–

तालिका क्रमांक–01

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के छात्र, छात्रा एवं विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि संबंधी तुलनात्मक परिणाम

लिंग	स्थान की प्रकृति	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमानक त्रुटि	क्रांतिक अनुपात	'पी'–मान
छात्र	ग्रामीण	200	133.02	15.01	1.06	0.77	> 0.05
	शहरी	200	131.90	13.96	0.99		

छात्रा	ग्रामीण	200	134.79	14.25	1.00	1.07	> 0.05
	शहरी	200	136.26	13.22	0.93		
विद्यार्थी	ग्रामीण	400	133.90	14.60	0.73	0.17	> 0.05
	शहरी	400	134.08	13.77	0.69		

स्वतंत्रता के अंश - 398
0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु तालिका मान - 1.97
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु तालिका मान - 2.59

स्वतंत्रता के अंश - 798
0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु तालिका मान - 1.96
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु तालिका मान - 2.58

उपरोक्त सारणी में शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों के छात्र, छात्रा एवं विद्यार्थियों (छात्र+छात्रा) के संवेगात्मक बुद्धि के तुलनात्मक परिणाम प्रदर्शित किये गये हैं। इन परिणामों से स्पष्ट होता है कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्र, छात्राओं एवं विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई अंतर नहीं होता है। प्राप्त क्रांतिक अनुपातों के मान क्रमशः 0.77, 1.07 एवं 0.17 है जो सार्थकता के लिये न्यूनतम निर्धरित मान 1. 97 से कम है। उपरोक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि रहवास की प्रकृति अर्थात् शहरी या ग्रामीण होने का संवेगात्मक बुद्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

तालिका क्रमांक–02

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विभिन्न विषयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि संबंधी तुलनात्मक परिणाम

स्थान की प्रकृति	विषय	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
ग्रामीण	कला	100	136.87	13.90
	गणित	100	134.07	12.15
	जीव विज्ञान	100	133.45	15.27
	वाणिज्य	100	131.23	16.73
शहरी	कला	100	134.59	14.62
	गणित	100	134.42	13.99
	जीव विज्ञान	100	133.99	11.84
	वाणिज्य	100	133.33	12.52

प्रसरण विश्लेषण सारांश तालिका

प्रसरण के स्रोत	स्वतंत्रता के अंश	वर्गों का योग	मध्यमान वर्ग	'एफ' अनुपात	'पी'–मान
समूहों के मध्य	7	1718.9	245.56	1.245	> 0.05
समूहों के अन्तर्गत	392	156164.8	197.17		

स्वतंत्रता के अंश –7, 392
0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु तालिका मान - 2.04
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु तालिका मान - 2.70

उपरोक्त सारणी में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रें के विभिन्न विषयों के विद्यार्थियों (छात्र+छात्रा) के तुलनात्मक परिणाम दर्शाये गये हैं। परिणामों से ज्ञात होता है कि प्राप्त 'एफ' अनुपात का मान 1.25 आया है, जो 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए न्यूनतम निर्धारित मान की अपेक्षा कम है। अर्थात् शहरी व ग्रामीण होने तथा विषयों की प्रकृति का विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि रहवास की प्रकृति एवं विद्यार्थियों द्वारा पढ़े गये विषय का उनके संवेगात्मक बुद्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

छात्र–छात्राओं एवं विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर रहवास की प्रकृति एवं विभिन्न संकाय होने का कोई सार्थक प्रभाव नहीं हुआ है। (संदर्भ सारणी क्रमांक 01, 02)। संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति के संवेगों पर आधारित होती है एवं इसके विकसित होने में अंतःक्रियात्मक वातावरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसके बारे में एक और तथ्य यह भी है कि उचित वातावरण व प्रशिक्षण के माध्यम से इसका विकास या उन्नयन किया जा सकता है। संवेगात्मक बुद्धि निश्चित रूप से व्यक्तियों के संवेगों पर आधारित है, जिसके अंतर्गत आत्म–जागरूकता, स्व प्रबंधन, स्वप्रेरणा, सहानुभूति एवं सामाजिक कौशल है। विभिन्न अनुसंधान परिणाम स्पष्ट करते हैं कि संवेगात्मक बुद्धि में प्रशिक्षण के माध्यम से वृद्धि हो सकती है **लोप्स एवं सोल्वेरी (2004), मौरेर एवं ब्रेकेट (2004), फर्नांडेज–बेरॉकल एवं रामोस (2004)**।

निष्कर्ष–

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के छात्र, छात्राओं एवं विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई अंतर नहीं होता है अर्थात् रहवास की प्रकृति का कोई सार्थक प्रभाव छात्र, छात्राओं एवं विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर नहीं पड़ता है।
2. शहरी व ग्रामीण होने तथा विषयों की प्रकृति का विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

आलपोर्ट, डब्ल्यु गार्डन (1937). *व्यक्तित्व एक मनोवैज्ञानिक व्याख्या,* हाबर्ड यूनिवर्सिटी, पृ.सं. 221।

अस्थाना, डॉ. मधु एवं वर्मा, डॉ. किरण बाला (2003). *व्यक्तित्व मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास* , नई दिल्ली, पृ.सं.–86–87

अस्थाना, डॉ. बिपिन, श्रीवास्तव, डॉ. विजया एवं अस्थाना कु. निधि (2008). *शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी,* आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन, पृ.सं. 183

भार्गव, महेश एवं द्वारका सिंह लाल (1988). *मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकीय के मूल आधार,* आगरा : कचहरी घाट, पृ.सं. 68–93

भाई योगेन्द्रजीत (1990). *मानव विकास का मनोविज्ञान,* आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर, पृ.सं. 218

गोलमेन, डी. (1995). *संवेगात्मक बुद्धि,* न्यूयार्क : बैन्टम बुक्स।

गैरेट, हेनरी ई. एवं वुडवर्थ आर.एस. (2007), *शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी,* नई दिल्ली : कल्याणी पब्लिशर्स, पृ.सं.317

कपिल, डॉ. एच. के. (2005). *सांख्यिकीय के मूल तत्व,* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2 पृ.सं. 87–141।

कुप्पुस्वामी, बी. (1990). *बाल व्यवहार और विकास,* दिल्ली : कोणार्क पब्लिशर्स, पृ.सं. 133

मंगल, डॉ. एस. के. एवं मंगल शुभ्रा (2008), *शैक्षिक मनोविज्ञान एवं मापन,* नवीन संस्करण, मेरठ : लॉयल बुक डिपो, पृ.सं. 57–59

माथुर, डॉ. एस.एस. (2007). *शिक्षा मनोविज्ञान,* आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर, पृ.सं. 93–95

मिश्रा, डॉ. महेन्द्र कुमार (2009). *शैक्षिक मनोविज्ञान,* नई दिल्लीः अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, प्रथम संस्करण, पृ.सं. 226

पचौरी, डॉ. गिरीश (2006). *शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार,* नवीन संस्करण, मेरठ : आर.लाल. बुक डिपो, पृ.सं. –57

पाठक, वी.डी. (1996). *शिक्षा के मनोविज्ञान,* तीसवां संस्करण, आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर, पृ.सं. 67–75

राय, पारसनाथ (2006). *अनुसंधान परिचय,* द्वादशम संस्करण, आगरा : लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, पृ.सं. 115–116

शर्मा, वीरेन्द्र प्रकाश (2004). *रिसर्च मेथडॉलाजी,* तृतीय संस्करण, जबलपुर : पंचशील प्रकाशन पृ.सं. 166